कविताएँ

गुड़ की डली

कात्यायनी

गुड़ की डली

कात्यायनी की कविताएँ

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

गुड़ की डली

ज़िद करता है,
रोता है पैर पटक-पटककर बच्चा
गुड़ की एक डली के लिए।
माँ के लाख इन्कार करने के बावजूद
अड़ा हुआ है बच्चा
अपनी अडिग हठ पर,
जानता है,
कहीं न कहीं आँचल में गाँठ लगाकर
या टोकरी के भीतर
दुनियाभर से छिपाकर
रखा ही होगा माँ ने
गुड़ का एक छोटा-सा टुकड़ा उसके लिए।
चाहे प्रलय हो जाये
या उलट-पुलट जाये पूरी की पूरी दुनिया,
सुरक्षित रहेगी गुड़ की वह डली
माँ के आँचल में
सात तहों के बीच।
दुनिया का कोई बादशाह
छीन नहीं सकता उसे
कोई जिन्न-प्रेत उसे ग़ायब नहीं कर सकता
इन्द्र देवता उसे बारिश में
गला नहीं सकते
माँ अपनी ताक़त से
उन्हें अवश कर देगी।
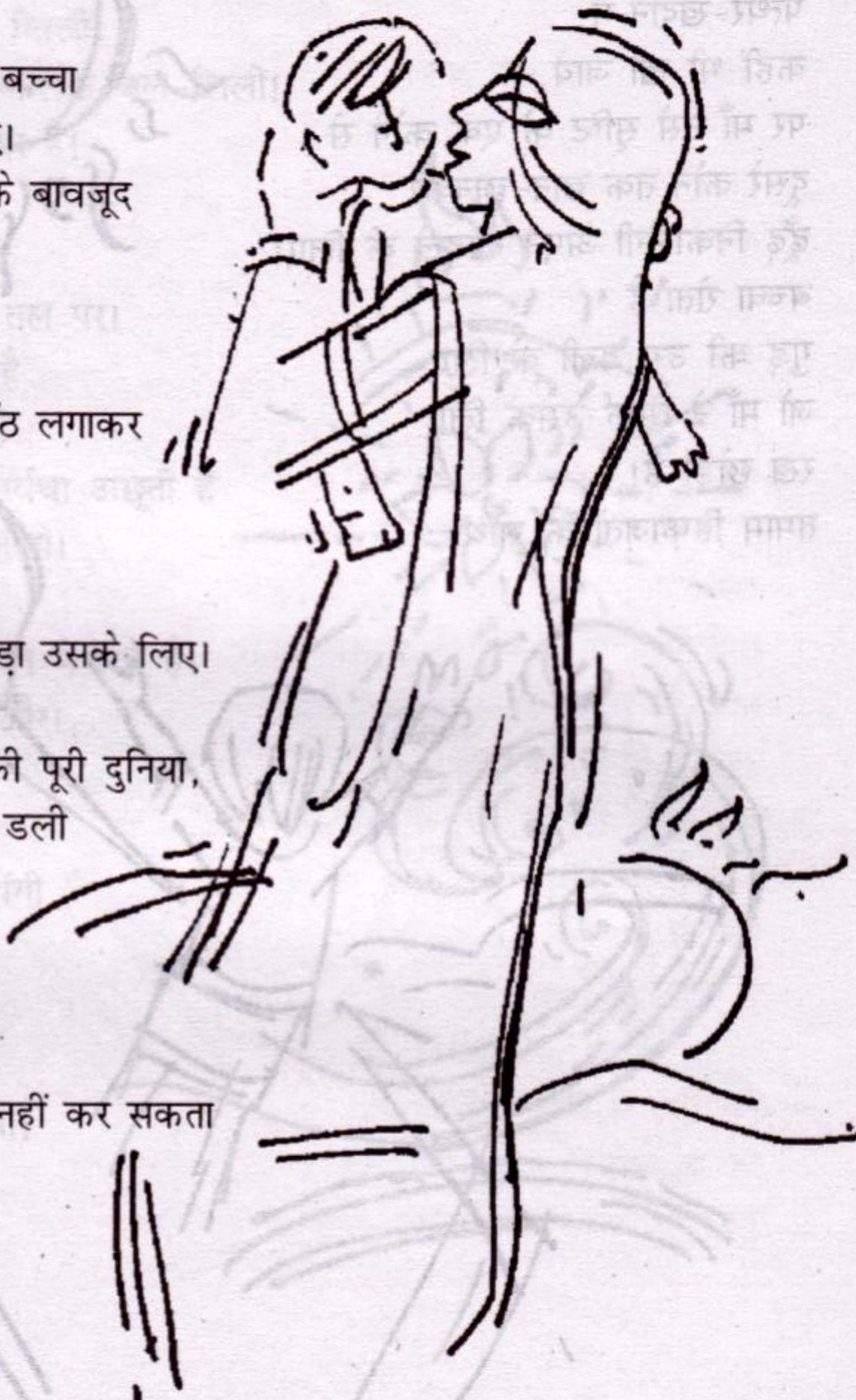
खो भी जाये यदि कहीं वह गुड़ की डली
खेत-खलिहान, चाय-बागान या
पत्थर-खदान में,
कहीं भी खो जाये,
पर माँ उसे सृष्टि के एक कोने से
दूसरे कोने तक छान-छानकर
ढूँढ़ निकालेगी अपने लाड़ले के लिए।
बच्चा रोता है
गुड़ की उस डली के लिए
जो माँ ने सिर्फ़ उसके लिए
रख छोड़ी है!
तमाम हिफ़ाज़तों के साथ!

जल-लिली

खिलखिला कैसी उठी! खिली।
पोखर में यह सफ़ेद निष्कलंक जल-लिली!
देखो ना, कैसी यह सुन्दर है!
भोली है कैसी यह!
कैसे धीरे-धीरे लहराकर
नाच रही है यह पोखर तल पर।
वीराने में जीवन भरती है
नीरव सूनेपन में गाती है
अभी यह अजानी है, सर्वथा अछूती है
पोखर के गन्दे-मन्दे जल से।
बच्ची है।
सच्ची बातें ही केवल मन में धारे है।
खुश रह ले थोड़े दिन और।
जीवन की दुष्करता
ज्यों-ज्यों यह जानेगी
चेहरे पर बढ़ती ही जायेंगी
चिन्ता की छायाएँ।
जीना सीखेगी तो
जानेगी सब कुछ ही।
धीरे-धीरे लड़ना सीखेगी!
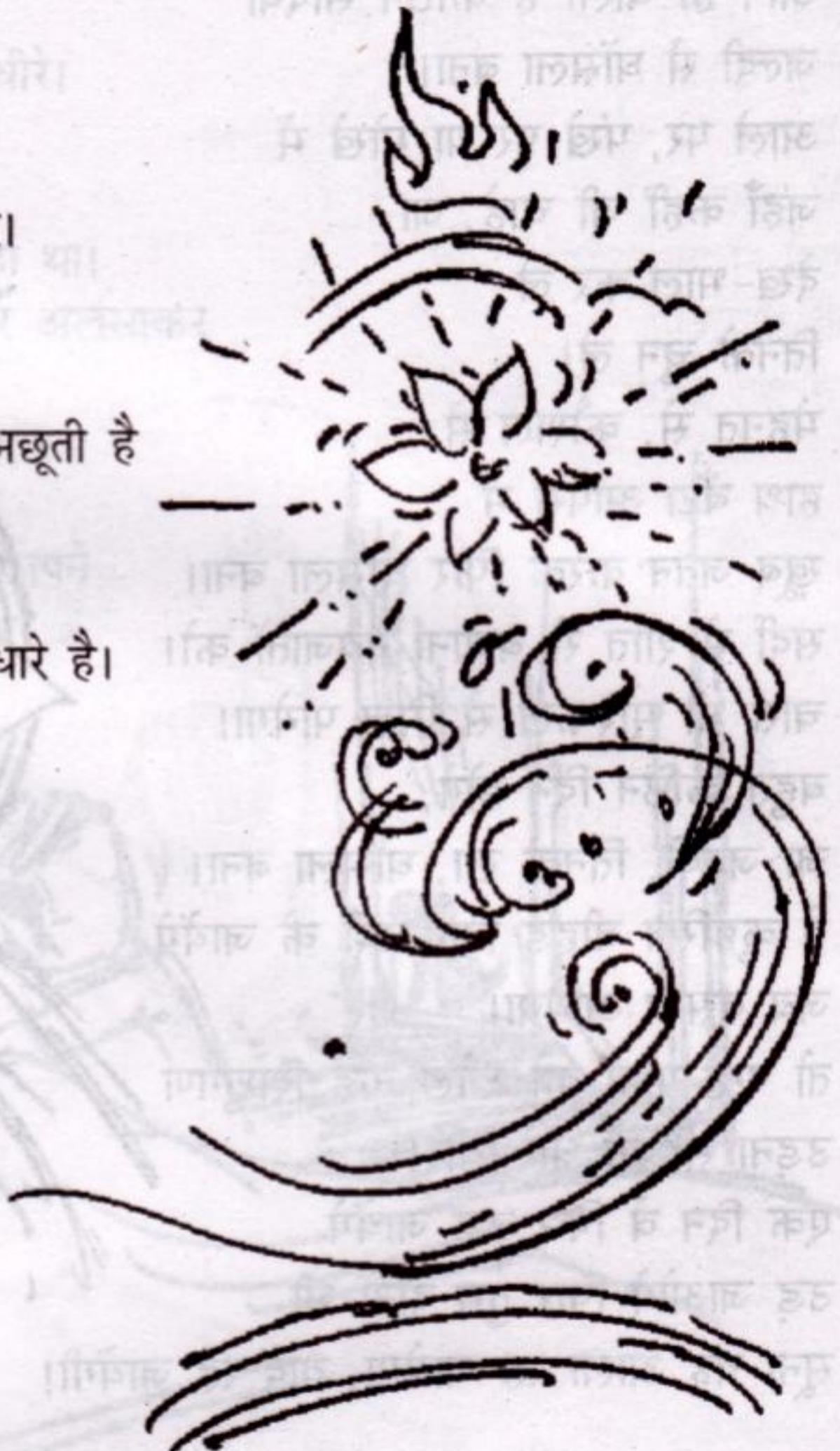
पण्डूक युगल से

आ!
आ, अपना घोंसला बना।
आने ही वाली हैं कठिन सर्दियाँ
जल्दी से घोंसला बना।
आले पर, पंखे पर या मोखे में
जहाँ कहीं जी चाहे, जा,
देख-भाल कर ले
तिनके चुन ले।
मेहनत से, कौशल से,
हाथ बँटा आपस में
ख़ूब जतन करके फिर घोंसला बना।
सर्दी में शीत से बचाना नवजातों को।
चारा भी मुश्किल से मिल पायेगा।
बहुत कठिन दिन होंगे,
जा जल्दी, तिनके ला, घोंसला बना।
ये कुहरिल बीहड़ दिन सर्दी के जायेंगे
जब बसन्त आयेगा।
तो नन्हे पंखों को खोले नन्हे शिशुगण
उड़ना सीखेंगे धीरे-धीरे।
एक दिन वे फिर उड़ जायेंगे
उड़ जाओगे फिर तुम दोनों भी
सूना यह आला रह जायेगा, यादें रह जायेंगी!

दुश्चिन्ता शिशु मन की

हड्डी तक को कँपा रहा था चिल्ला जाड़ा
दुबक गये थे सभी घरों में
खा-पीकर हम दोनों बिस्तर में
सिमटे थे
नींद मुझे अब घेर रही थी धीरे-धीरे।
देखा, उसकी आँखों में पर
नींद नहीं थी
इधर-उधर बेचैन करवटें बदल रहा था।
'नींद नहीं आ रही?' – पूछने पर अलसाकर
बोला – 'नहीं' मगर मन में
कुछ था जो कहते नहीं बन पड़ा
वह शब्दों को जुटा रहा था।
थोड़ी देर बाद उठकर वह बोला अपने
नन्हे हाथों को मेरे गालों पर रखकर,
'अम्मा, वह कुत्ते का बच्चा
राह भूलकर इधर आ गया है,
दरवाज़े पर बैठा है

कूँ-कूँ कर अपनी अम्मा को ढूँढ़ रहा है।
बहुत ठण्ड है, डर भी उसको लगता होगा
अन्दर कर लो उसको, कल बाहर कर देंगे
जब दिन होगा, अपना रस्ता पा जायेगा।'
नन्हे से गदबदे ठण्ड से सिकुड़े-सहमे
कुत्ते के बच्चे को लेकर भीतर आयी
राहत उसको मिली, खिला मन
आँखें चमकीं।
दुश्चिन्ता से मुक्त तुरत ही लगा ऊँघने।
बाँहें डाल गले में
सपनों में जा खोया
गर्मी पाकर
कुत्ते का बच्चा भी सोया!
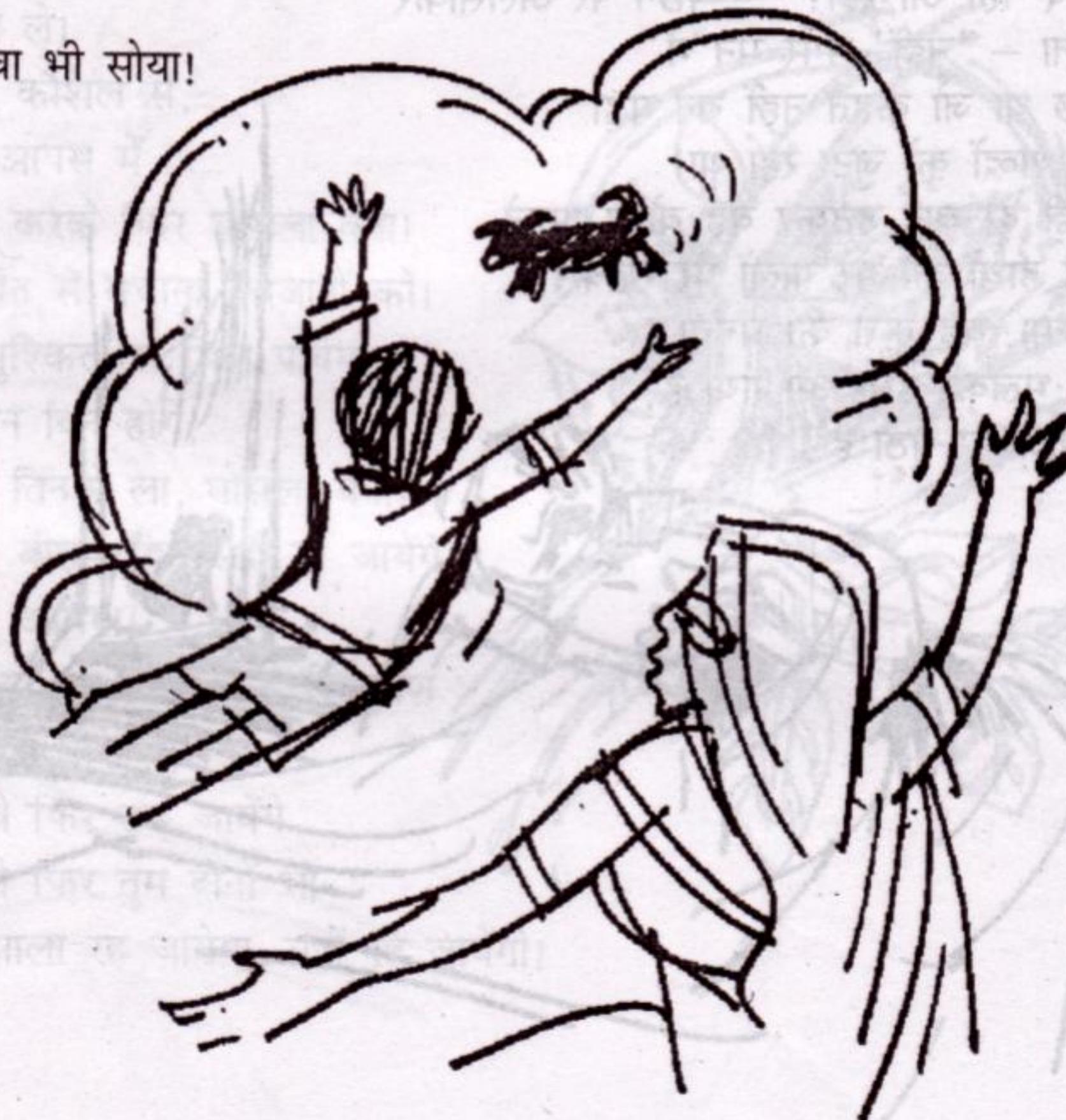
इसीलिए आहत है...

घनी घटाएँ उस दिन दुख की
छायी थीं भोले मुख पर
आँखों में आँसू तैर रहे थे।
बस्ता बिना उतारे
आकर खड़ा हो गया,
रोज़ की तरह झूला नहीं पकड़कर आँचल।
'सज़ा मिली स्कूल में मुझे आज' और यह
कहते-कहते लुढ़क पड़े
आँखों से दो मोती गालों पर।
'सज़ा मिली? की होगी तूने कोई ग़लती।'
'नहीं, शोर मैं नहीं
दूसरे मचा रहे थे, मैं तो चुप था
और सभी के साथ मुझे भी खड़ा कर दिया।'
बिना किसी ग़लती के
जीवन में कितना कुछ
सहना पड़ता है कितनों को
अभी कहाँ यह उसने जाना
जानेगा ही धीरे-धीरे।
सहज न्याय का बोध
अभी तक बना हुआ है
इसीलिए आहत है, दुख से भरा हुआ है!

बिल्ली के बच्चों को मत मारो बेटा!

मत मारो बेटा इनको।
ये भी अपनी माँ के उतने ही प्यारे हैं
आँखों के तारे हैं, राजदुलारे हैं।
वह इनको चाट-चाट रोज़ साफ़ करती है
और धूप में लेटी अलसायी
इनको वह दूध फिर पिलाती है।
जैसे हर माँ करती, वैसे ही वह इनको
इस मुश्किल दुनिया में जीना सिखलाती है
बस्ती के बिल्ले से इनको बचाती है

और इन्हें खुद उससे बचना सिखलाती है
लड़ना सिखलाती है।
वह इनको चूहों को मारना सिखलाती है
खुद अपने बूते पर जीना सिखलाती है।
मत मारो इनको।
ये सुन्दर हैं, भोले हैं। बच्चे हैं ये भी! प्यार करो।
खेलो इनसे। ये भी खेलेंगे।
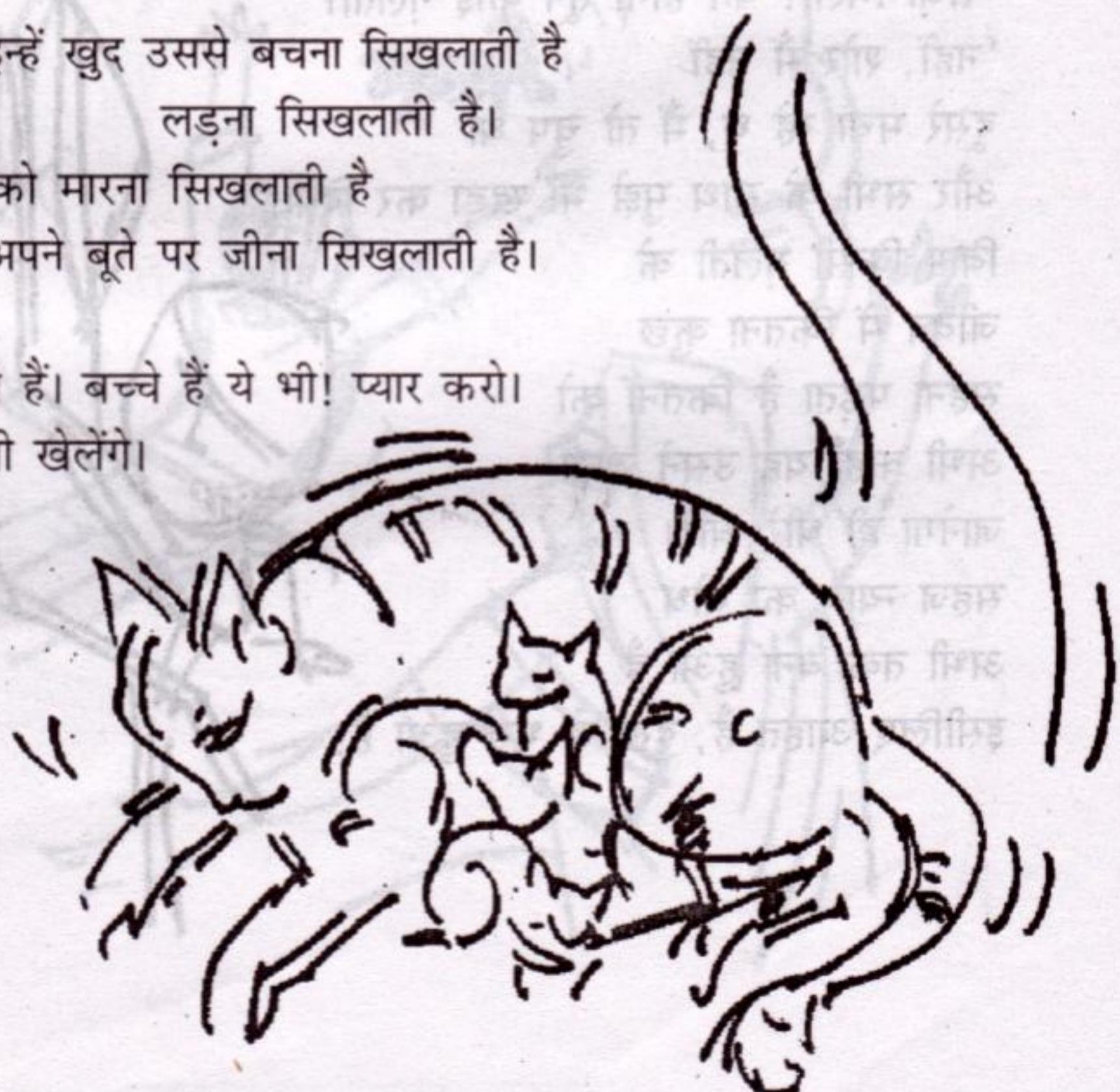
बीमारी में बेटे के साथ (एक)

'बेटे, तुम जाओ ना, बाहर जाकर खेलो
गुमसुम यूँ क्यों बैठे हो मेरे सिरहाने'
'नहीं यहीं खेलूँगा,
बॉल खेलने में थक जाता हूँ
हाँ, तुम सो जाओ माँ! मैं खुद ही
अपने से खेलूँगा,
ब्लाकों को जोड़ूँगा, कैरम की गोटियाँ
सजाऊँगा।'
'ऊब रहे हो यूँ बैठे-बैठे
जाओ खेलो, अब मैं सोऊँगी'
रुकता है वह छिन भर।
झिझक-झिझक करके फिर कहता है –
'माँ, जब मैं बाहर को जाऊँगा,
प्यास अगर तुमको लग जायेगी
और तुम पुकारोगी
तो कैसे मैं फिर सुन पाऊँगा?'

नन्हे-से हाथों से सिर को
सहलाता है
तपती आँखों पर शीतलता छा
जाती है
उसके ही भावों की गोदी में
उसके ही नन्हे-से हाथों के
साये में
छिन भर को भूल कठिन जीवन को
उसके ही सपनों के लोक चली जाती हूँ।
बच्ची बन करके सो जाती हूँ!

बीमारी में बेटे के साथ (दो)

घंण्टी ज्यों ही बजती है नीचे से रिक्शे की
भारी मन उठता है
बस्ता लेकर बाहर जाने को होता है
आज रोज़ के जैसा ज़िद नहीं करता है।
'जाता हूँ अम्मा!' वह धीरे से कहता है
रुकता है, और दवा का डिब्बा,
तेल और पानी सिरहाने ला रखता है,
जाने को होता है ज्यों ही,
मैं कहती हूँ वैसे ही, जैसे
वह कहता था उसे छोड़
बाहर जब जाती मैं
'कब आओगे बेटा?' 'जल्दी ही, आज ज़रा
जल्दी ही आऊँगा'
उत्तर वह देता है वैसे ही, जैसे मैं देती थी।
जैसे वह हठ करता था मुझसे,
उसी तरह उससे मैं कहती हूँ, 'आज नहीं जाओ तुम'
रुकता है, और यह दिखाता है मानो कुछ सोच रहा,
'अच्छा माँ, आज नहीं जाऊँगा
आज की पढ़ाई कल पूरी कर आऊँगा।'
मन की गुदगुदी को दबाता है
कोशिश यह करता है आवरण बड़प्पन का बना रहे।
हँसी फूट पड़ती है सहसा ही मेरी और
वह भी फिर ज़ोर-ज़ोर हँसने लग जाता है,
गाल लाल-लाल हुए जाते हैं और जान जाता है
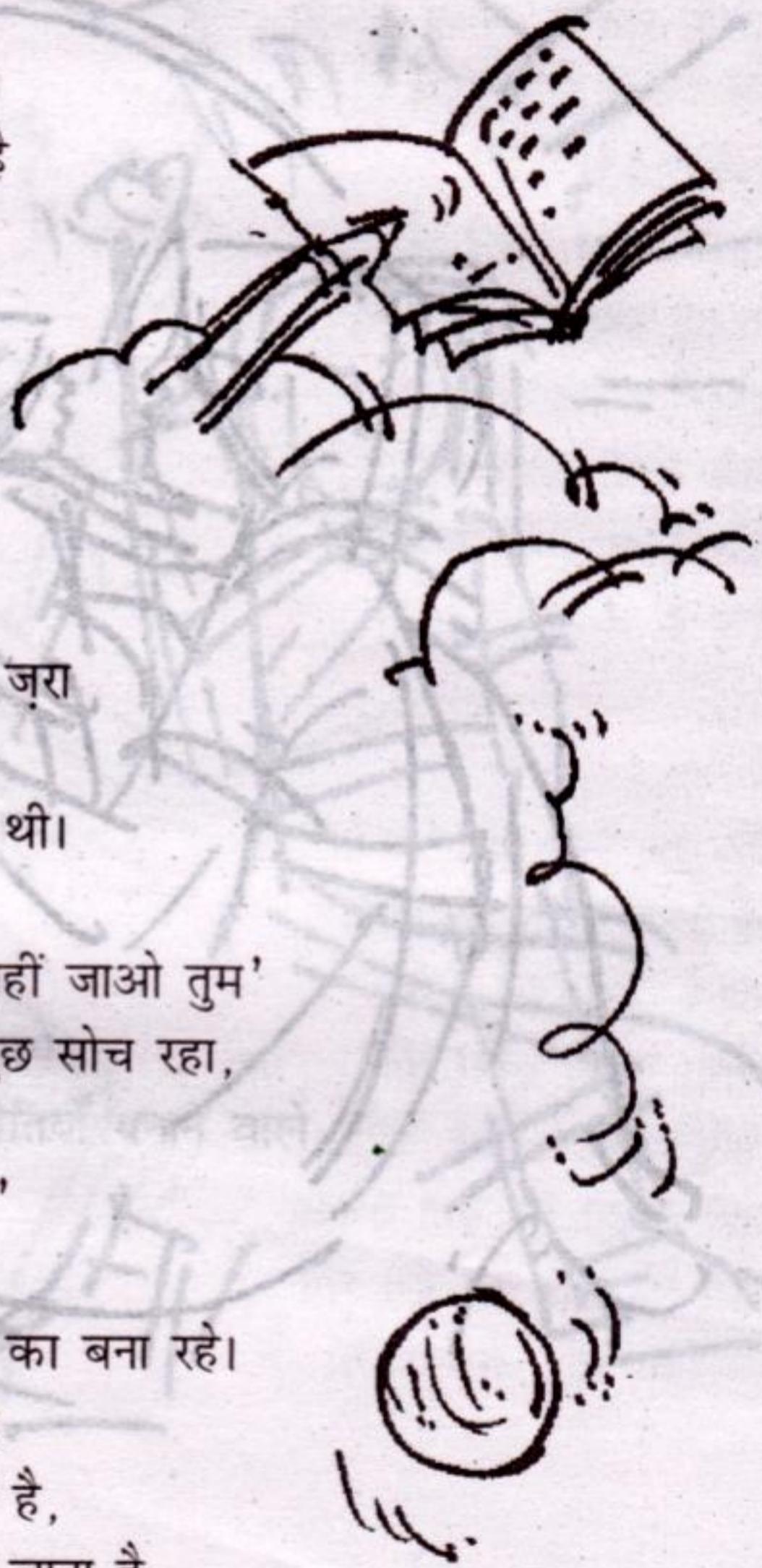
समझ गयी हूँ उसकी इच्छा मैं,
छाती से आकर लग जाता है!

एक मासूम की बग़ावती प्रार्थना

हे ईश्वर!
या तो इस जगत को
स्कूलों से मुक्त करो
या हमें ही उठा लो। 'किडनैप' करा दो।
चमत्कार कर दो
लीला दिखा दो
हे प्रभु आनन्ददाता!
बस्तों में किताबों की जगह
चॉकलेट भर दो या
मिसरी की डलियाँ।
परमात्मा!
सभी पोथियों में आग लग जाये।
सभी मास्टरों को हैज़ा हो जाये।
पहाड़े रटाते समय चाचा की ज़ुबान ऐंठ जाये।
बाढ़ में सभी स्कूल डूब जायें।
वहाँ हम कागज़ की नाव चलायें।
हाज़िरी रजिस्टर के पन्ने फाड़कर पतंग उड़ायें।
शिक्षा को लेकर बहस करने वाले और नीतियाँ बनाने वाले
सभी शिक्षाशास्त्री
सीधे पागलख़ाने जायें।
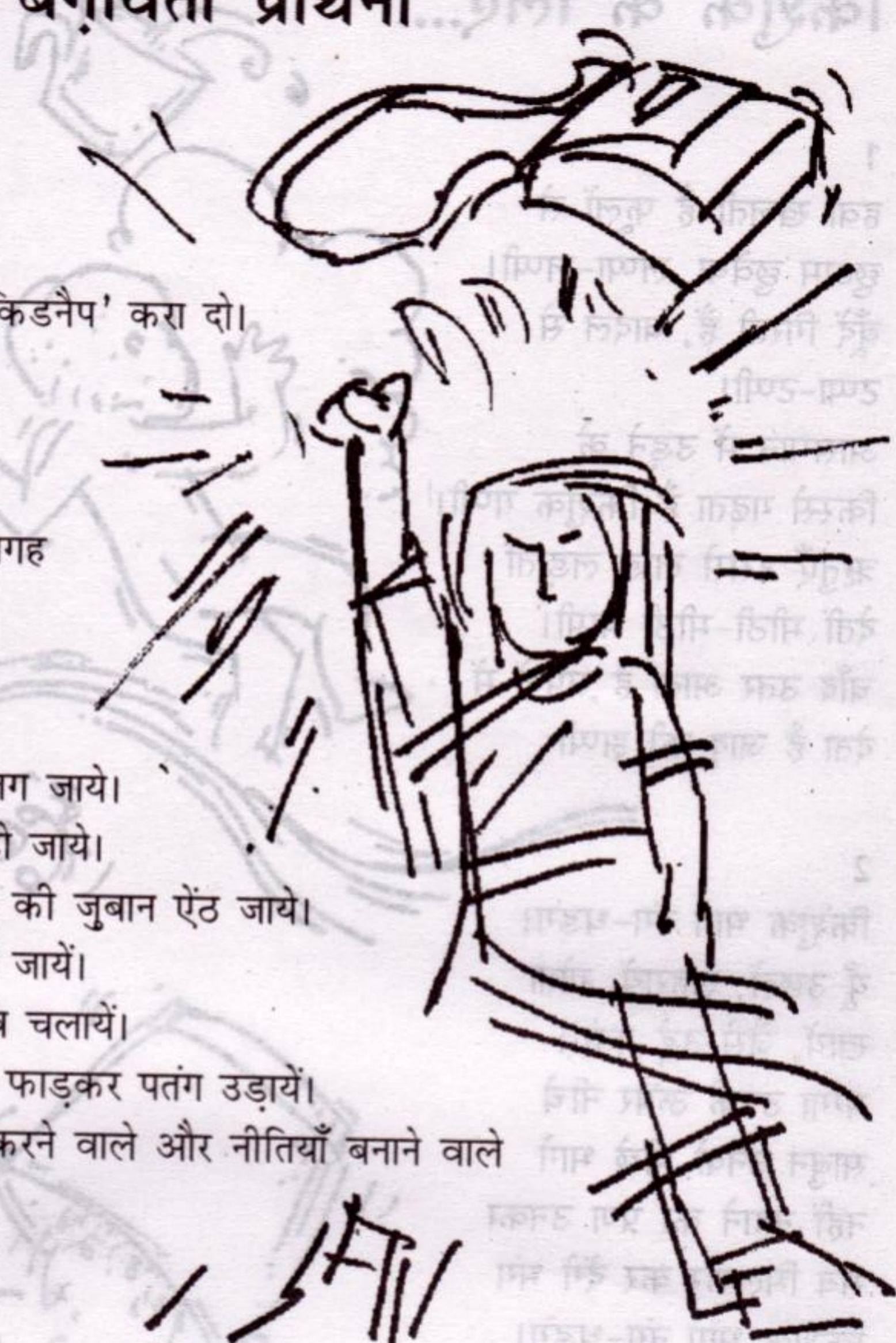
किंशुक के लिए....

1

हवा खेलती है फूलों से
छुअम छुवैया, लप्पा-लप्पी।
बूँदें गिरती हैं, बादल से
टप्पा-टप्पी।
आसमान में उड़ने के
किस्से गढ़ता है किंशुक गप्पी।
ऋतुएँ उससे लाड़ लड़ातीं
देतीं मीठी-मीठी पप्पी।
चाँद उतर आता है सपनों में
देता है जादू की झप्पी

2

किंशुक भागे नंग-धड़ंग।
यूँ उछलें, लहरायें, गोता
खायें, जैसे उड़े पतंग।
मग्गा उनके ऊपर नीचे
साबुन उनके पीछे भागे
नहीं नहाने का प्रण उनका
सब मिलकर कर देंगे भंग
किंशुक भागे नंग-धड़ंग।